श्री अरनाथ विधान

-रचयित्री-

गणिनीप्रमुख
आर्यिका ज्ञानमती

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 468
ISBN-978-93-84003-79-1

श्री अरनाथ विधान

–रचयित्री –

जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी,
दो बार डी.लिट्. की मानद उपाधि से अलंकृत
परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि
श्री ज्ञानमती माताजी

जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी दिव्यशक्ति परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की पावन प्रेरणा से निर्मित मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र पर 108 फुट उत्तुंग विशालकाय भगवान ऋषभदेव की अन्तर्राष्ट्रीय पंचकल्याणक प्रतिष्ठा माघ शु. तृतीया से दशमी तक (11 से 17 फरवरी 2016) के शुभ अवसर पर प्रकाशित

-प्रकाशक-
दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.फोन नं.- (01233) 280184, 280994
Website : www.jambudweep.org www.encyclopediaofjainism.com
E-mail : jambudweeptirth@gmail.com
Facebook : jaintirthjambudweep

COURTESY–JAIN BOOK DEPOT
C/o Shri Nabhi Kumar Manav Kumar Jain
C-4, Opp. PVR Plaza, Cannaught Place, New Delhi-1
Ph.-011-23416101-02-03/Website : www.jainbookdepot.com

प्रथम संस्करण	वीर नि.सं. 2542, माघ शु. तृतीया	मूल्य
1100 प्रतियाँ	11 फरवरी 2016	20/-रु.

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएँ भी प्रकाशित होती रहती हैं।

–: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :–

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी
(दो बार डी.लिट्. की मानद उपाधि से अलंकृत)

–: मार्गदर्शन :–

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी
(पीएच.डी. की मानद उपाधि से अलंकृत)

–: निर्देशक एवं सम्पादक:–

कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

–: प्रबंध सम्पादक :–

जीवन प्रकाश जैन

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

कम्पोजिंग - ज्ञानमती नेटवर्क
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

सम्पादकीय

–कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

ॐ नमो मंगलं कुर्यात्, ह्रीं नमश्चापि मंगलम्।
मोक्षबीजं महामंत्रं, अर्हं नमः सुमंगलम्।।

वर्तमान में–कलियुग में आज घर गृहस्थी में अनेक समस्याएँ आ जाती हैं जिससे अक्सर लोग माताजी के पास आते हैं और पूज्य माताजी से निवेदन करते हैं माताजी हमारे ऊपर बहुत संकट आया है आप ही इसे दूर कर सकती हैं। माताजी उन्हें यंत्र–मंत्र बता देती हैं और कहती हैं आप इसे श्रद्धापूर्वक करिए आपका संकट अवश्य दूर होगा।

इसके साथ ही माताजी एक बात प्रायः सबसे कहती हैं कि घर गृहस्थी में रहते हुए भी यदि आप लोग समय–समय पर पूजा विधान करते रहें, प्रतिदिन भगवान का दर्शन करें, अभिषेक, पूजन आदि करें तो संकट नहीं आएगा। आचार्यों ने शास्त्रों में श्रावक के षट् कर्त्तव्य बताए हैं–

देवपूजा–गुरूपास्तिः स्वाध्यायः संयमस्तपः।
दानं चेति गृहस्थानां षट्कर्माणि दिने दिने।।

अर्थात् देवपूजा, गुरुओं की उपासना, स्वाध्याय, संयम, तप और दान ये श्रावक के छह आवश्यक हैं। इन्हें प्रतिदिन करने से श्रावक धर्म सार्थक होता है।

जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी चारित्रचन्द्रिका, युगप्रवर्तिका, राष्ट्रगौरव, दिव्यशक्ति परम पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने 400 ग्रंथों की रचना करके एक कीर्तिमान स्थापित किया है। पूज्य माताजी की सभी रचनाएँ अद्वितीय हैं। 24 तीर्थंकरों के पृथक्–पृथक् विधानों में यह **'श्री अरनाथ विधान'** पूज्य माताजी ने रचकर तैयार किया है। यह विधान भी अतिशयकारी विधान है, क्योंकि इसमें भगवान के एक सौ आठ नाम मंत्रों के 108 अर्घ्य हैं। यह विधान सभी के जीवन में सुख, शान्ति, समृद्धि को दिलाए, यही मंगल भावना है।

पूज्य माताजी स्वस्थ रहें, दीर्घायु प्राप्त करें, वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला उत्तरोत्तर उन्नति को प्राप्त हो, यही जिनेन्द्रदेव से मंगल कामना है।

प्रस्तावना

–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

जैनधर्म के अट्ठारवें तीर्थंकर श्री अरनाथ भगवान ने हस्तिनापुर की धरती को अपने पावन रज से पवित्र किया है। तीर्थंकर, चक्रवर्ती और कामदेव इन तीन पद के धारी श्री अरनाथ भगवान ने घातियाँ कर्मों को नष्टकर अर्हंत अवस्था प्राप्त की और फिर अघातियाँ कर्मों को भी नाशकर सिद्ध बनें।

त्रिभुवन के नाथ भगवान अरनाथ ने सुदर्शन पिता एवं मित्रसेना माता के आंगन में मगसिर सुदी चौदस को जन्म लिया। गर्भ से ही मति, श्रुत, अवधि तीन ज्ञानधारी भगवान के प्रभाव से माता देवियों के कठिन से कठिन प्रश्नों का उत्तर भी सरलता से दे देती हैं। गर्भ में आने के छह महीने पहिले से ही माता के आंगन में रत्नवृष्टि होने लगती है जो कि लगातार पन्द्रह महीने तक चलती है यह सब तीर्थंकर का ही माहात्म्य है।

श्री अरनाथ भगवान ने मगसिर सुदी दशमी को दीक्षा ग्रहण की, कार्तिक सुदी बारस को केवलज्ञान हुआ। उस समय सौधर्म इन्द्र की आज्ञा से धनकुबेर ने अधर आकाश में समवसरण की रचना कर दी। जिसमें भगवान पृथ्वी से बीस हजार हाथ की ऊँचाई पर जाकर गंधकुटी में अधर विराजमान हो गए। भगवान के समवसरण की महिमा का वर्णन अपरम्पार है। भगवान की आयु चौरासी हजार वर्ष की एवं शरीर एक सौ बीस हाथ उत्तुंग अति सुन्दर था। भगवान का चिह्न मछली एवं वर्ण स्वर्ण सदृश था। चैत्र वदी अमावस को प्रभू ने सम्मेदशिखर पर्वत से मोक्षधाम को प्राप्त किया। ऐसे जन्म से ही भगवान संज्ञा को प्राप्त, चौंतीस अतिशयों एवं आठ प्रातिहार्यों से सहित तीर्थंकर श्री अरनाथ का यह विधान है। जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी, दिव्यशक्ति, चारित्रचन्द्रिका परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी ने चौबीस तीर्थंकरों के पृथक्-पृथक् विधानों की शृंखला में यह **'श्री अरनाथ विधान'** रचकर प्रदान किया है।

इस विधान में सर्वप्रथम मंगलाचरण है फिर अर्हंत पूजा है। इसके बाद तीर्थंकर श्री अरनाथ की पूजा एवं पंचकल्याणक के अर्घ्य हैं। तत्पश्चात् भगवान के एक हजार आठ नामों में से एक सौ आठ नाम के एक सौ आठ अर्घ्य मंत्र सहित हैं। जैसे—

आप नाम 'श्रीवृक्षलक्षणा' इंद्र सदा गावें।
दिव्य अशोक वृक्ष इक योजन मणिमय दर्शावें।।
श्री अरप्रभु को मैं नित पूजूँ, भक्ती मन धरके।
पाऊँ निज गुण संपत्ती मैं, स्वपर भेद करके।।

इसी तरह से श्लक्षण, लक्षण्य, शुभलक्षण, निरक्ष, पुण्डरीकाक्ष, पुष्कल आदि एक सौ आठ नामों को लेकर उनके अर्घ्य बनाए हैं। जिन्हें पढ़कर अर्घ्य चढ़ाने से महान सातिशय पुण्य का बंध होता है। 108 अर्घ्य के बाद जाप्य मंत्र है फिर जयमाला है। जयमाला में पूज्य माताजी ने लिखा है कि भगवान के समवसरण में तीस गणधर, पचास हजार मुनि, साठ हजार आर्यिका, एक लाख श्रावक और तीन लाख श्राविकाएँ थी। प्रत्येक तीर्थंकर के समवसरण में मुनियों से आर्यिकाओं की संख्या अधिक एवं श्रावकों से श्राविकाओं की संख्या अधिक रही है। और भी इस जयमाला में पूज्य माताजी ने भगवान की महिमा का, उनके सौन्दर्य का वर्णन करते हुए लिखा है—

अपूर्व तेज आप देख कोटि सूर्य लज्जते।
अपूर्व सौम्य मूर्ति देख कोटि चन्द्र लज्जते।।
अपूर्व शान्ति देख क्रूर जीव वैर छोड़ते।
सुमंद मंद हास्य देख शुद्ध चित्त होवते।।

इस विधान के अंत में पूज्य माताजी ने भावना व्यक्त की है कि यह विधान करने, कराने वाले सभी जीवों के अमंगल को दूरकर मंगल को प्रदान करे। सुख, संपत्ति, संतति आदि की वृद्धि हो, रत्नत्रय की प्राप्ति हो और अनुक्रम से एक दिन केवलज्ञान रूपी सूर्य का उदय हो।

विधान के अंत में प्रशस्ति है। प्रशस्ति के बाद भी अरनाथ तीर्थंकर की जन्मभूमि हस्तिनापुर तीर्थ की पूजा है। इसके बाद श्री अरनाथ एवं हस्तिनापुर तीर्थ की मंगल आरती है। भगवान की भक्ति में गाने हेतु भजन भी दिए हैं। मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र पर निर्मित एक सौ आठ फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की प्रतिमा का भी भजन है, अन्त में पूज्य माताजी को अतिप्रिय श्री वृंदावन कवि विरचित गुरु मंगलाष्टक स्तुति दी है।

इस प्रकार से इस छोटे से विधान में **कुल 3 पूजा, 108 अर्घ्य, 1 पूर्णार्घ्य एवं 3 जयमालायें हैं।** यह विधान सभी के जीवन में सुख, शान्ति, समृद्धि को प्राप्त करावे, यही मंगल भावना है। विधान रचयित्री पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी स्वस्थ रहें, दीघार्य प्राप्त करें, यही जिनेन्द्रदेव से मंगल प्रार्थना है।

हार्दिक उद्‌गार

–ब्र. कु. बीना जैन (संघस्थ)

नमः श्री वर्धमानाय, निर्धूत कलिलात्मने।
सालोकानां त्रिलोकानां, यद्विद्या दर्पणायते।।

बीसवीं शताब्दी में मुनि परम्परा को जीवन्त करने वाले युगप्रवर्तक चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शान्तिसागर जी महाराज हुए हैं। जिनकी चर्या चतुर्थकालीन सम मुनियों के समान थी। इनके प्रथम पट्टशिष्य आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से आर्यिका दीक्षा प्राप्त कर, आर्यिका ज्ञानमती नाम पाकर, स्वनाम को सार्थक करते हुए परम पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने चारों अनुयोगों का तलस्पर्शी ज्ञान प्राप्त करके, ग्रंथों का खूब स्वाध्याय करके, अपने ज्ञान को परिपक्व करके 'सहस्रनाम मंत्र' की रचना से अपनी लेखनी का शुभारम्भ करके अब तक छोटे–बड़े सभी ग्रंथों को मिलाकर 400 ग्रंथों की रचना की है।

आज के वैज्ञानिक युग में पारस टी. वी. चैनल के माध्यम से लोग घर बैठे पूज्य माताजी के मुखारविन्द से प्रतिदिन ज्ञानामृत का पान करते हैं। जब वे हस्तिनापुर आकर पूज्य माताजी का दर्शन करते हैं, तो गद्‌गद्‌ होकर कहते हैं कि माताजी हम तो आपके शुद्ध शास्त्रीय, आगमानुसार प्रवचन सुनकर धन्य हो गए।

वास्तव में पूज्य माताजी ने भगवान महावीर की दिव्यध्वनि से निकली द्वादशांग वाणी को जिन्हें पूर्वाचार्यों ने ग्रंथरूप में लिपिबद्ध किया है उसी को आत्मसात करके, जन–जन के हिताय प्रवचन के द्वारा तथा ग्रंथों के द्वारा प्रदान कर रही हैं। अष्टसहस्री जैसे क्लिष्ट न्याय के ग्रंथ का अनुवाद करके पूज्य माताजी ने एक महान् कार्य किया है। विद्वद्वर्ग, युवावर्ग, बालवर्ग सभी के लिए पूज्य माताजी ने समयसार, नियमसार की टीका, कल्पद्रुम, इन्द्रध्वज आदि विधान, प्रतिज्ञा, परीक्षा, जीवनदान आदि उपन्यास एवं बालविकास के 4 भाग, जैसी पुस्तकें लिखकर सर्वांगीण ज्ञान का प्रचार प्रसार किया है। 24 तीर्थंकर विधानों की श्रृंखला में यह अट्ठारवें तीर्थंकर श्री अरनाथ भगवान का विधान है।

मेरा परम सौभाग्य है कि पूज्य माताजी की कुल परम्परा में जन्म लेकर, उन्हें गुरुरूप में पाकर और उनसे ज्ञानामृत को प्राप्त कर अपने जीवन को धन्य किया है। सच्चे देव, शास्त्र, गुरु के प्रति भक्ति को करते हुए अपनी नारी पर्याय को सफल करूँ यही मंगल भावना है। पूज्य माताजी दीर्घायु हों, स्वस्थ रहें, यही जिनेन्द्रदेव से मंगल प्रार्थना करते हुए, ज्ञान की भण्डार पूज्य माताजी के चरणों में कोटि–कोटि नमन करती हूँ।

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि

श्री ज्ञानमती माताजी का संक्षिप्त-परिचय

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

जन्मस्थान–टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.

जन्मतिथि–आसोज सुदी 15 (शरदपूर्णिमा) वि. सं. 1991, (22 अक्टूबर सन् 1934)

जाति–अग्रवाल दि. जैन, **गोत्र**–गोयल, **नाम**–कु. मैना

माता-पिता–श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जैन

आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत–ई. सन् 1952, बाराबंकी में शरदपूर्णिमा के दिन

क्षुल्लिका दीक्षा–चैत्र कृ. 1, ई. सन् 1953 को महावीरजी अतिशय क्षेत्र (राज.) में आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से। नाम-क्षुल्लिका वीरमती

आर्यिका दीक्षा–वैशाख कृ. 2, ई. सन् 1956 को माधोराजपुरा (राज.) में चारित्रचक्रवर्ती 108 आचार्य श्री शांतिसागर जी की परम्परा के प्रथम पट्टाधीश आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से।

साहित्यिक कृतित्व–अष्टसहस्री, समयसार, नियमसार, मूलाचार, कातंत्र-व्याकरण, षट्खण्डागम आदि ग्रंथों के अनुवाद/टीकाएं एवं लगभग 300 ग्रंथों की लेखिका।

डी.लिट्. की मानद उपाधि–सन् 1995 में अवध वि.वि. (फैजाबाद) द्वारा एवं तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय मुरादाबाद द्वारा 8 अप्रैल 2012 को ''डी.लिट्.'' की मानद उपाधि से विभूषित।

तीर्थ निर्माण प्रेरणा–हस्तिनापुर में जंबूद्वीप, तेरहद्वीप, तीनलोक आदि रचनाओं के निर्माण, शाश्वत तीर्थ अयोध्या का विकास एवं जीर्णोद्धार, प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का निर्माण, तीर्थंकर जन्मभूमियों का विकास यथा-भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) में 'नंद्यावर्त महल' नामक तीर्थ निर्माण, भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकन्दी तीर्थ (निकट गोरखपुर-उ.प्र.) का विकास, भगवान पार्श्वनाथ केवलज्ञानभूमि अहिच्छत्र तीर्थ पर तीस चौबीसी मंदिर, हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप स्थल पर भगवान शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31-31 फुट उत्तुंग खड्गासन प्रतिमा, मांगीतुंगी में निर्माणाधीन 108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की विशाल प्रतिमा, महावीर जी तीर्थ पर महावीर धाम में पंचबालयति मंदिर, शिर्डी में ज्ञानतीर्थ, सम्मेदशिखर में आचार्य श्री शांतिसागर धाम, ग्वालियर में चिन्तामणि पार्श्वनाथ अतिशय क्षेत्र इत्यादि।

महोत्सव प्रेरणा–पंचवर्षीय जम्बूद्वीप महामहोत्सव, भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव, अयोध्या में भगवान ऋषभदेव महाकुंभ मस्तकाभिषेक, कुण्डलपुर महोत्सव, भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव, दिल्ली में कल्पद्रुम महामण्डल विधान का ऐतिहासिक आयोजन इत्यादि। विशेषरूप से 21 दिसम्बर 2008 को जम्बूद्वीप स्थल पर विश्वशांति अहिंसा सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसका उद्घाटन भारत की तत्कालीन राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील द्वारा किया गया।

शैक्षणिक प्रेरणा–'जैन गणित और त्रिलोक विज्ञान' पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन, इतिहासकार सम्मेलन, न्यायाधीश सम्मेलन एवं अन्य अनेक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सेमिनार, ऑनलाइन जैन इनसाइक्लोपीडिया आदि।

रथ प्रवर्तन प्रेरणा–जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति (1982 से 1985), समवसरण श्रीविहार (1998 से 2002), महावीर ज्योति (2003-2004) आचार्य श्री शांतिसागर सम्मेद शिखर ज्योति रथ (2014) भगवान ऋषभदेव विश्वशांति कलश यात्रा रथ-मांगीतुंगी (2015) के दो रथों का भारत भ्रमण।

इस प्रकार नित्य नूतन भावनाओं की जननी पूज्य माताजी चिरकाल तक इस वसुधा को सुशोभित करती रहें, यही मंगल कामना है।

विषयानुक्रमणिका

	विषय	पृष्ठ संख्या
1.	मंगलाचरण	1
2.	श्री अर्हंत पूजा	3
3.	श्री अरनाथ तीर्थंकर पूजा	8
4.	अथ 108 अर्घ्य	10
5.	जयमाला	27
6.	प्रशस्ति	29
7.	श्री अरनाथ जन्मभूमि हस्तिनापुर तीर्थ पूजा	30
8.	अरनाथ भगवान की आरती	35
9.	हस्तिनापुर तीर्थ की आरती	36
10.	भजन–नाम तिहारा तारन हारा.........	37
11.	भजन–विश्व की सबसे ऊँची प्रतिमा........	38
12.	गुरु मंगलाष्टक	39

मण्डल विधान का नक्शा

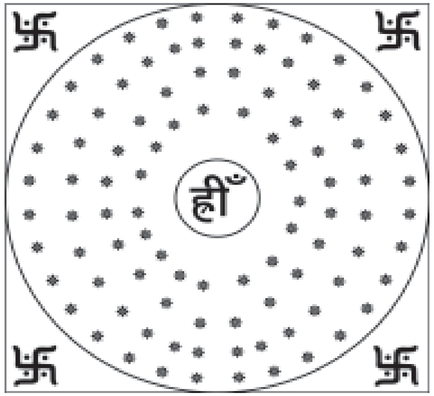

कुल पूजा–3, अर्घ्य 108, पूर्णार्घ्य–1, जयमाला–3।

श्री अरनाथ विधान

मंगलाचरण

–उपेन्द्रवज्रा छंद–

स्तुत्या न तुष्यन् प्रददाति सौख्यं,
प्रद्वेषतो दुःखमपि प्रदत्ते।
तथाप्यरस्त्वं किल वीतरागः,
ह्यचिंत्यमाहात्म्यमतः स्तुवे त्वां।।1।।

–शंभु छंद–

अरनाथ ! स्वयं अरि कर्मों को, घाता अर्हत्पदवी पायी।
त्रिभुवन के नाथ उदर तिष्ठे, मित्रसेना माता हर्षायी।।
सुरपूज्य सुदर्शन जनक अहो, है धन्य हस्तिनापुरी अहा।
फाल्गुन वदि तीज गर्भ मंगल, मगसिर सुदि चौदस जन्म लहा।।1।।

मगसिर सित दशमी दीक्षा ली, बाह्याभ्यंतर तप तपते थे।
कार्तिक सित बारस के दिन में, केवलज्ञानी रवि चमके थे।।
चौरासि हजार वर्ष आयू, तनु इक सौ बीस हाथ सुन्दर।
मछली लाञ्छन युत कनक वर्ण, प्रभु कामदेव औ चक्रेश्वर।।2।।

शुभ चैत्र अमावस के प्रभुवर, सम्मेदाचल से मृत्युजयी।
निज भेद विज्ञान प्रगट करके, अपने को पाया आप सही।।
मैं भी प्रभु चरण कमल वंदूँ, यह कृपा प्रसाद मिले मुझको।
मैं केवल ''ज्ञानमती'' पाऊँ, मुझसे ही सिद्धि मिले मुझको।।3।।

अथ जिनयज्ञप्रतिज्ञापनाय मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

पूजा नं. १

श्री अर्हंत पूजा

स्थापना–गीता छंद

अरिहंत प्रभु ने घातिया को घात निज सुख पा लिया।
छ्यालीस गुण के नाथ अठरह दोष का सब क्षय किया।।
शत इंद्र नित पूजें उन्हें गणधर मुनी वंदन करें।
हम भी प्रभो! तुम अर्चना के हेतु अभिनन्दन करें।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः हे अर्हत्परमेष्ठिन्! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं अर्हन् नमः हे अर्हत्परमेष्ठिन्! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं अर्हन् नमः हे अर्हत्परमेष्ठिन्! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–बसन्ततिलका छंद–

श्रीमज्जिनेंद्र पद में जलधार देऊं।
आतंक पंक जग का सब दूर होवे।।
इच्छानुसार फलदायक कल्पतरू ये।
पूजा जिनेन्द्रप्रभु की त्रय ताप नाशे।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः परमेष्ठिभ्यः स्वाहा। (जलं निर्वपामीति स्वाहा।)

काश्मीरि केशर सुचंदन को घिसाऊँ।
चर्चूं जिनेन्द्र पदपंकज में रुची से।।
संसार के सकल ताप विनाश करती।
पूजा जिनेन्द्र प्रभु की सब सौख्य देती।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः परमात्मकेभ्यः चंदनं ... ।

जो कुंदपुष्प कलियों सम दीखते हैं।
धोये सु तंदुल लिये भर थाल में हैं।।
अर्हंत सन्मुख रखूँ बहु पुंज नीके।
पाथेय मोक्षपथ में जन के लिये हो।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः अनादिनिधनेभ्यः अक्षतं ... ।

मल्ली गुलाब वर पुष्प सुगंधि करते।
अर्हंत के चरण में रुचि से चढ़ाऊँ।।
पापान्धकूप मधि डूब रहे जनों को।
उद्धार हेतु जिनपूजन ही जगत् में।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः सर्वनृसुरासुरपूजितेभ्यः पुष्पं ... ।

शालीय ओदन सुगंधित भोज्यवस्तु।
पीयूष तुल्य चरु लेकर थाल भरके।।
अर्हंत सन्मुख चढ़ा क्षुध व्याधि नाशूँ।
तृप्ती अनंत जिनपूजन से मिलेगी।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः अनंतज्ञानेभ्यः नैवेद्यं ... ।

जो चित्त का तमसमूह विनाश करके।
त्रैलोक्यगेह वर दीपक दीप ज्योति।।
ले दीप आरति करूँ वरज्ञानज्योति।
पाऊँ अनंत निजज्ञान विकास करके।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः अनंतदर्शनेभ्यः दीपं ... ।

जो धूप सुन्दर सुगंध बिखेरती है।
अग्नी विषे जलत धूम्र उड़ावती है।।
खेऊँ दशांगवर धूप जिनेन्द्र आगे।
संपूर्ण पाप जलते वर सौख्य होगा।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः अनंतवीर्येभ्यः धूपं ... ।

ये कल्पवृक्ष फल सम अति मिष्ट ताजे।
अमृत समान रस से परिपूर्ण दीखें।।
पूजा करूँ फल चढ़ाकर आपकी मैं।
स्वात्मैक सिद्धि फल प्राप्त करूँ इसी से।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः अनंतसौख्येभ्यः फलं ... ।

नीरादि आठ वर द्रव्य संजोय करके।
घंटा ध्वजा चंवर छत्र सुदर्पणादी।।

मांगल्य द्रव्य शुभ लेकर पूजते ही।
संपूर्ण मंगल मिले निज सौख्य पाऊँ।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः परममंगलेभ्यः अर्घ्यं ... ।

श्रीपूज्यपाद जिन के चरणाब्ज नमते।
संपूर्ण इंद्र शिर से अतिभक्ति भावे।।
श्री पूज्य के पदनिकट जलधार देते।
हो शांति लोक त्रय में मुझ भक्त को भी।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः स्वस्ति भद्रं भवतु जगतां शांतये शांतिधारां निष्पादयामि शांतिकृद्भ्यः स्वाहा।

(शांतिधारा करें)

जो इन्द्र भक्ति वश नेत्र हजार करके।
बाहू हजार कर तांडव नृत्य करता।।
ऐसे जिनेन्द्रपद पुष्प चढ़ाय करके।
पूजा त्रिकाल कर अनुपम सौख्य पाऊँ।।11।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः ध्यातृभिः अभीप्सितफलेभ्यः स्वाहा।

(पुष्पांजलि चढ़ावें)

जाप्य मंत्र–ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्परमेष्ठिभ्यो नमः।

जयमाला

–दोहा–

श्री अरिहंत जिनेन्द्र का, धरूँ हृदय में ध्यान।
गाऊँ गुणमणिमालिका, हरूँ सकल अपध्यान।।1।।

–शम्भु छंद–

जय जय प्रभु तीर्थंकर जिनवर, तुम समवसरण में राज रहे।
जय जय अर्हंत् लक्ष्मी पाकर, निज आत्मा में ही आप रहे।।
जन्मत ही दश अतिशय होते, तन में न पसेव न मल आदी।
पयसम सित रुधिर सु समचतुष्क, संस्थान संहनन है आदी।।1।।

अतिशय सुरूप, सुरभित तनु हैं, शुभ लक्षण सहस आठ सोहें।
अतुलित बल प्रियहित वचन प्रभो, ये दश अतिशय जन मन मोहें।।
केवलरवि प्रगटित होते ही, दश अतिशय अद्भुत ही मानों।
चारों दिश इक-इक योजन तक, सुभिक्ष रहे यह सरधानो।।2।।

हो गगन गमन, नहिं प्राणीवध, नहिं भोजन नहिं उपसर्ग तुम्हें।
चउमुख दीखें सब विद्यापति, नहिं छाया नहिं टिमकार तुम्हें।।
नहिं नख औ केश बढ़े प्रभु के, ये दश अतिशय सुखकारी हैं।
सुरकृत चौदह अतिशय मनहर, जो भव्यों को हितकारी हैं।।3।।

सर्वार्ध मागधीया भाषा, सब प्राणी मैत्री भाव धरें।
सब ऋतु के फल औ फूल खिलें, दर्पणवत् भूरत्नाभ धरें।।
अनुकूल सुगंधित पवन चले, सब जन मन परमानंद भरें।
रजकंटक विरहित भूमि स्वच्छ, गंधोदक वृष्टी देव करें।।4।।

प्रभु पद तल कमल खिलें सुन्दर, शाली आदिक बहु धान्य फलें।
निर्मल आकाश दिशा निर्मल, सुरगण मिल जय जयकार करें।।
अरिहंत देव का श्रीविहार, वर धर्मचक्र चलता आगे।
वसुमंगल द्रव्य रहें आगे, यह विभव मिला जग के त्यागे।।5।।

तरुवर अशोक सुरपुष्प वृष्टि, दिव्यध्वनि, चौंसठ चमर कहें।
सिंहासन भामंडल सुरकृत, दुंदुभि छत्रत्रय शोभ रहें।।
ये प्रातिहार्य हैं आठ कहे, औ दर्शन ज्ञान सौख्य वीरज।
ये चार अनंत चतुष्टय हैं, सब मिलकर छ्यालिस गुण कीरत।।6।।

क्षुध तृषा जन्म मरणादि दोष, अठदश विरहित निर्दोष हुए।
चऊ घाति घात नवलब्धि पाय, सर्वज्ञ प्रभू सुखपोष हुए।।
द्वादशगण के भवि असंख्यात, तुम धुनि सुन हर्षित होते हैं।
सम्यक्त्व सलिल को पाकर के, भव भव के कलिमल धोते हैं।।7।।

मैं भी भवदुःख से घबड़ा कर, अब आप शरण में आया हूँ।
सम्यक्त्व रतन नहिं लुट जावे, बस यही प्रार्थना लाया हूँ।।

संयम की हो पूर्ती भगवन्! औ मरण समाधी पूर्वक हो।
हो केवल 'ज्ञानमती' सिद्धी, जो सर्व गुणों की पूरक हो।।8।।

ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं अर्हत्परमेष्ठिभ्यः जयमाला महार्घ्यं....।

शांतये शांतिधारा, पुष्पांजलिः।

–दोहा –

मोह अरी को हन हुए, त्रिभुवन पूजा योग्य।
नमो नमो अरिहंत को, पाऊँ सौख्य मनोज्ञ।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

卐

पूजा नं. २

श्री अरनाथ तीर्थंकर पूजा

–दोहा –

तीर्थंकर अरनाथ! तुम, चक्ररत्न के ईश।
ध्यान चक्र से मृत्यु को, मारा त्रिभुवन ईश।।1।।
आह्वानन विधि से यहाँ, मैं पूजूँ धर प्रीत।
रोग शोक दुःख नाशकर, लहूँ स्वात्म नवनीत।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अरनाथतीर्थंकर! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री अरनाथतीर्थंकर! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्री अरनाथतीर्थंकर! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अष्टक –अडिल्ल छंद –

सिंधुनदी को नीर, स्वर्णझारी भरूँ।
मिले भवोदधितीर, तीन धारा करूँ।।
श्री अरनाथ जिनेन्द्र, जजूँ मन लाय के।
समतारस पीयूष, चखूँ तुम पाय के।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अरनाथतीर्थंकराय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

केशर चंदन घिसा, कटोरी में भरा।
रागदाह हरने को, चर्चूं सुखकरा।।श्री अर.।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अरनाथतीर्थंकराय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

चंद्रकिरण सम उज्ज्वल, अक्षत ले लिये।
तुम आगे मैं पुंज, धरूँ सुख के लिए।।श्री अर.।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अरनाथतीर्थंकराय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

चंपा जुही गुलाब, पुष्प सुरभित लिये।
भव विजयी के चरणों, में अर्पण किये।।श्री अर.।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अरनाथतीर्थंकराय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मालपुआ रसगुल्ला, बहु मिष्टान्न ले।
क्षुधारोग हर हेतु, चढ़ाऊँ नित भले।।

श्री अरनाथ जिनेन्द्र, जजूँ मन लाय के।
समतारस पीयूष, चखूँ तुम पाय के।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अरनाथतीर्थंकराय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत दीपक ले करूँ, आरती नाथ की।
मोहध्वांत हर लहूँ, भारती ज्ञान की।।श्री अर.।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अरनाथतीर्थंकराय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अगर तगर वर धूप, अग्नि में खेवते।
कर्म दूर हो नाथ! चरण युग सेवते।।श्री अर.।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अरनाथतीर्थंकराय अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफल पूग बदाम, आम केला लिये।
शिवफल हेतू तुम, पद में अर्पण किये।।श्री अर.।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अरनाथतीर्थंकराय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन अक्षत, आदिक वसु द्रव्य ले।
अर्घ चढ़ाऊँ ''ज्ञानमती'' निधियाँ मिलें।।श्री अर.।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अरनाथतीर्थंकराय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–सोरठा –

अर जिन चरण सरोज, शांतीधारा मैं करूँ।
चउसंघ शांती हेत, शांतीधारा जगत में।।10।।

शांतये शांतिधारा।

कमल केतकी पुष्प, सुरभित निजकर से चुने।
श्री जिनवर पदपद्म, पुष्पांजलि अर्पण करूँ।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

पंचकल्याणक अर्घ्य

–सखी छंद –

फाल्गुन कृष्णा तृतिया में, प्रभु गर्भ निवास किया तें।
सुरपति ने उत्सव कीना, हम पूजें भवदुखहीना।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं फाल्गुनकृष्णातृतीयायां श्री अरनाथतीर्थंकरगर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मगसिर शुक्ला चौदस के, प्रभुजन्म लिया सुर हर्षे।
मेरू पर न्हवन हुआ है, इन्द्रों ने नृत्य किया है।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं मार्गशीर्षशुक्लाचतुर्दश्यां श्री अरनाथतीर्थंकरजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मगसिर सुदी दशमी तिथि में, दीक्षा धारी प्रभु वन में।
इंद्रों से पूजा पाई, हम पूजें मन हरषाई।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं मार्गशीर्षशुक्लादशम्यां श्री अरनाथतीर्थंकरदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कार्तिक सुदि बारस तिथि में, केवल रवि प्रकटा निज में।
बारह गण को उपदेशा, हम पूजें भक्ति समेता।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं कार्तिकशुक्लाद्वादश्यां श्री अरनाथतीर्थंकरकेवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।

शुभ चैत्र अमावस्या में, मुक्तिश्री परणी प्रभु ने।
इन्द्रों ने की प्रभु अर्चा, पूजन से निजसुख मिलता।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं चैत्रकृष्णामावस्यायां श्री अरनाथतीर्थंकरमोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य (दोहा) –

श्री अरनाथ की वंदना, करे कर्मअरि नाश।
अर्घ्य चढ़ाकर पूजते, मिले सर्वगुण राशि।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अरनाथतीर्थंकरपंचकल्याणकाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ 108 अर्घ्य

-दोहा-

ज्ञान दर्श सुखवीर्यमय, गुण अनंत विलसंत।
सुमन चढ़ाकर पूजहूँ, हरूँ सकल जगफंद।।1।।

।।अथ मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

विष्णुपद–छंद

आप नाम 'श्रीवृक्षलक्षणा' इंद्र सदा गावें।
दिव्य अशोक वृक्ष इक योजन मणिमय दर्शावें।।
श्री अरप्रभु को मैं नित पूजूँ, भक्ती मन धरके।
पाऊँ निज गुण संपत्ती मैं, स्वपर भेद करके।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीवृक्षलक्षणनामसमन्विताय श्री अरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनंतलक्ष्मी प्रिया साथ में, आलिंगन करते।
सूक्ष्मरूप होने से भगवन् 'श्लक्ष्ण' नाम धरते।।श्री.।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्लक्ष्णनामसमन्विताय श्री अरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट महाव्याकरण कुशल हो, सर्वशास्त्रकर्ता।
प्रभु आप 'लक्षण्य' नामधर सब लक्षण भर्ता।।श्री.।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं लक्षण्यनामसमन्विताय श्री अरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शुभलक्षण' श्रीवृक्ष शंख पंकज स्वस्तिक आदी।
प्रातिहार्य मंगल सुद्रव्य शुभ लक्षण सौ अठ भी।।श्री.।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं शुभलक्षणनामसमन्विताय श्री अरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभू 'निरक्ष' इंद्रिय से विरहित सौख्य अतींद्रिय हैं।
इंद्रिय निग्रहकर जो ध्याते वे निज सुखमय हैं।।श्री.।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं निरक्षनामसमन्विताय श्री अरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभू 'पुण्डरीकाक्ष' कहाये नेत्र कमलसम हैं।
नासादृष्टि सौम्य छवि लखते नेत्र प्रफुल्लित हैं।।श्री.।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं पुण्डरीकाक्षनामसमन्विताय श्री अरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पुष्कल' आत्मगुणों से भगवन्! तुम परिपुष्ट हुये।
भक्तजनों का पोषण करते जो तुम शरण भये।।
श्री अरप्रभु को मैं नित पूजूँ, भक्ती मन धरके।
पाऊँ निज गुण संपत्ती मैं, स्वपर भेद करके।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं पुष्कलनामसमन्विताय श्री अरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभू 'पुष्करेक्षण' पंकज दल सदृश नेत्र लम्बे।
निजमन कमल खिलाने हेतू भवि तुम अवलंबे।।श्री.।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं पुष्करेक्षणनामसमन्विताय श्री अरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो 'सिद्धिया' स्वात्मलब्धि मुक्ती के दायक हो।
भक्तों की सब कार्यसिद्धि हित तुम ही लायक हो।।श्री.।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धियानामसमन्विताय श्री अरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'सिद्धसंकल्प' सर्व संकल्प सिद्ध कीना।
भक्तों के भी सकल मनोरथ पूरे कर दीना।।श्री.।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धसंकल्पनामसमन्विताय श्री अरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सिद्धात्मा' प्रभु तुम आत्मा ने सिद्ध अवस्था ली।
सिद्ध शिला पर आप विराजे अनवधि गुणशाली।।श्री.।।11।।

ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धात्मानामसमन्विताय श्री अरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाम! 'सिद्धसाधन' शिवसाधन रत्नत्रय धारा।
जिनने आप चरण को पूजा उन्हें शीघ्र तारा।।श्री.।।12।।

ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धसाधननामसमन्विताय श्री अरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञेयवस्तु सब जान लिया है नहीं शेष कुछ भी।
'बुद्धबोध्य' अतएव कहाये, लिया सर्वसुख भी।।श्री.।।13।।

ॐ ह्रीं अर्हं बुद्धबोध्यनामसमन्विताय श्री अरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नत्रय गुण विभव प्रशंसित सब जग में प्रभु का।
'महाबोधि' अतएव आप ही हरो सर्व विपदा।।श्री.।।14।।

ॐ ह्रीं अर्हं महाबोधिनामसमन्विताय श्री अरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परम श्रेष्ठ अतिशायी पूजा ज्ञान लहा तुमने।
सदा गुणों से बढ़ते रहते 'वर्द्धमान' जग में।।श्री.।।15।।

ॐ ह्रीं अर्हं वर्द्धमाननामसमन्विताय श्री अरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बड़ी-बड़ी ऋद्धी के धारक आप 'महर्द्धिक' हो।
गणधर मुनिगण वंदित चरणा आप सौख्यप्रद हो।।श्री.।।16।।

ॐ ह्रीं अर्हं महर्द्धिकनामसमन्विताय श्री अरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वेद-चार अनुयोग ज्ञान के अंग-उपाय तुम्हीं।
अतः आप 'वेदांग' ज्ञानप्राप्ती के हेतु तुम्हीं।।श्री.।।17।।

ॐ ह्रीं अर्हं वेदांगनामसमन्विताय श्री अरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वेद-आत्मविद्या शरीर से भिन्न आतमा है।
इसके ज्ञाता भिन्न किया तनु अतः 'वेदविद्' हैं।।श्री.।।18।।

ॐ ह्रीं अर्हं वेदविद्नामसमन्विताय श्री अरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वेद्य' आप ऋषिगण के द्वारा ज्ञान योग्य माने।
स्वसंवेद्य ज्ञान वो पाते जो पूजन ठाने।।श्री.।।19।।

ॐ ह्रीं अर्हं वेद्यनामसमन्विताय श्री अरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जातरूप' तुम जनमें जैसे रूप दिगंबर है।
प्रकृतरूप निर्दोष आपका भविजन सुखप्रद है।।श्री.।।20।।

ॐ ह्रीं अर्हं जातरूपनामसमन्विताय श्री अरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्वानों में श्रेष्ठ 'विदांवर' आप पूर्णज्ञानी।
तुम पद पंकज भक्त शीघ्र ही वरते शिवरानी।।
श्री अरप्रभु को मैं नित पूजूँ, भक्ती मन धरके।
पाऊँ निजगुण संपत्ती मैं, स्वपर भेद करके।।21।।

ॐ ह्रीं अर्हं विदांवरनामसमन्विताय श्री अरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वेदवेद्य' प्रभु आगम से तुम जानन योग्य कहे।
केवलज्ञान से हि या प्रभु जानन योग्य रहे।।श्री.।।22।।

ॐ ह्रीं अर्हं वेदवेद्यनामसमन्विताय श्री अरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'स्वयंवेद्य' प्रभु स्वयं सुअनुभव गम्य आप ही हैं।
स्वयं स्वयं का अनुभव करके हुये केवली हैं।।श्री.।।23।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्वयंवेद्यनामसमन्विताय श्री अरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'विवेद' वेदत्रय विरहित स्त्री पुरुषादी।
हो विशिष्ट विज्ञानी भगवन्! आतम सुखस्वादी।।श्री.।।24।।

ॐ ह्रीं अर्हं विवेदनामसमन्विताय श्री अरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वदताम्बर' प्रभु वक्तागण में सर्वश्रेष्ठ तुम ही।
सब भाषामय दिव्यध्वनी से उपदेशा तुम ही।।श्री.।।25।।

ॐ ह्रीं अर्हं वदताम्बरनामसमन्विताय श्री अरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

-दोहा-

नाथ! 'अनादिनिधन' तुम्हीं, आदि अंत से हीन।
अतिशय लक्ष्मीयुत तुम्हीं, पूजूँ भक्ति अधीन।।26।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनादिनिधननामसमन्विताय श्री अरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'व्यक्त' आप सुज्ञान से, प्रगट सर्वथा मान्य।
सर्व अर्थ प्रकटित किया, जजत मिले धन धान्य।।27।।

ॐ ह्रीं अर्हं व्यक्तनामसमन्विताय श्री अरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'व्यक्तवाक्' प्रभु तुम वचन, सर्व प्राणि को गम्य।
सभी अर्थ स्पष्ट हो, नमत जन्म हो धन्य।।28।।

ॐ ह्रीं अर्हं व्यक्तवाक्नामसमन्विताय श्री अरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'व्यक्तशासन' तुम्हीं, त्रिभुवन में स्पष्ट।
सब विरोधविरहित सुमत, नमूँ नमूँ अति इष्ट।।29।।

ॐ ह्रीं अर्हं व्यक्तशासननामसमन्विताय श्री अरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'युगादिकृत् ' ऋषभसम धर्मतीर्थ करतार।
द्विविध धर्म उपदेशकृत् , जजूँ नमूँ शत बार।।30।।

ॐ ह्रीं अर्हं युगादिकृत्नामसमन्विताय श्री अरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'युगाधार' युग स्वयं के, धर्मतीर्थ के नाथ।
दिव्यध्वनि से बोध दे, किया त्रिलोक सनाथ।।31।।

ॐ ह्रीं अर्हं युगाधारनामसमन्विताय श्री अरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'युगादि' तुम धर्मयुग, का करके प्रारंभ।
मोक्षमार्ग जग को दिया, जजूँ तुम्हें तज दंभ।।32।।

ॐ ह्रीं अर्हं युगादिनामविभूषिताय श्री अरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जगदादिज' निज तीर्थ को, करके अविच्छिन्न।
धर्मतीर्थकर्ता हुये, पूजूँ चित्त प्रसन्न।।33।।

ॐ ह्रीं अर्हं जगदादिजनामसमन्विताय श्री अरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज प्रभाव से इंद्रगण को भी कर अतिक्रांत।
प्रभु 'अतींद्र' तुमको जजूँ, मिले सौख्य निर्भांत।।34।।

ॐ ह्रीं अर्हं अतीन्द्रनामसमन्विताय श्री अरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'अतींद्रिय' ज्ञानसुख, आप अतीन्द्रिय मान्य।
इंद्रिय के गोचर नहीं, नमूँ मिले सुख साम्य।।35।।

ॐ ह्रीं अर्हं अतींद्रियनामसमन्विताय श्री अरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'धीन्द्र' पूर्ण कैवल्यमय, बुद्धी के हो ईश।
शुद्ध बुद्धि मेरी करो जजूँ नमाकर शीश।।36।।

ॐ ह्रीं अर्हं धीन्द्रनामसमन्विताय श्री अरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परम मोक्ष ऐश्वर्य का, अनुभव करते आप।
प्रभु 'महेन्द्र' तुमको नमूँ, हरो सकल संताप।।37।।

ॐ ह्रीं अर्हं महेन्द्रनामसमन्विताय श्री अरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूक्ष्म अंतरित दूर के, अतींद्रिय सुपदार्थ।
एक समय में देखते, 'अतींद्रियार्थदृक्' नाथ।।38।।

ॐ ह्रीं अर्हं अतींद्रियार्थदृक्नामसमन्विताय श्री अरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रिय विरहित आप हैं, आत्म सौख्य परिपूर्ण।
अतः 'अनिंद्रिय' मुनि कहे, नमत सर्व दुखचूर्ण।।39।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनिंद्रियनामसमन्विताय श्री अरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अहमिंद्रों से पूज्य प्रभु, 'अहमिन्द्रार्च्य' महान।
अहं अहं कह संपदा, मिले जजत ही आन।।40।।

ॐ ह्रीं अर्हं अहमिन्द्रार्च्यनामसमन्विताय श्री अरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपातीति स्वाहा।

बड़े-बड़े सब इन्द्र से, पूजित आप जिनेश।
सभी 'महेंद्रमहित' कहें नमूँ हरो भवक्लेश।।41।।

ॐ ह्रीं अर्हं महेंद्रमहितनामसमन्विताय श्री अरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चउविध पूजा से महित, त्रिभुवन पूज्य 'महान्'।
नमूँ सदा मैं भाव से, करो स्वात्म धनवान्।।42।।

ॐ ह्रीं अर्हं महान्नामसमन्विताय श्री अरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सबसे ऊँचे उठ चुके, 'उद्भव' जगत्प्रसिद्ध।
जन्म श्रेष्ठ जग में धरा, पूजत करो समृद्ध।।43।।

ॐ ह्री अर्हं उद्भवनामसमन्विताय श्री अरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्मसृष्टि के बीजप्रभु, 'कारण' आप प्रसिद्ध।
भविजन मुक्ती हेतु हो, नमत कार्य सब सिद्ध।।44।।

ॐ ह्रीं अर्हं कारणनामसमन्विताय श्री अरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

युग कि आदि में सृष्टि के 'कर्ता' आप जिनेश।
असि मषि आदिक षट् क्रिया उपदेशी परमेश।।45।।

ॐ ह्रीं अर्हं कर्तानामसमन्विताय श्री अरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भवसमुद्र के पार को, पहुँचे 'पारग' नाथ।
मुझको पार उतारिये, नमूँ नमूँ नत माथ।।46।।

ॐ ह्रीं अर्हं पारगनामसमन्विताय श्री अरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भव-सागर सुपांचविध, इससे तारणहार।
'भवतारग' तुमको जजूँ भरो सौख्य भण्डार।।47।।

ॐ ह्रीं अर्हं भवतारगनामसमन्विताय श्री अरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'अगाह्य' नहिं अन्य के अवगाहन के योग्य।
तुम गुणपार न पा सकें, पूजत सौख्य मनोज्ञ।।48।।

ॐ ह्रीं अर्हं अगाह्यनामसमन्विताय श्री अरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

योगिगम्य प्रभु अति गहन आप अलक्ष्य स्वरूप।
जजूँ 'गहन' अतिशय कठिन आप रूप चिद्रूप।।49।।

ॐ ह्रीं अर्हं गहननामसमन्विताय श्री अरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'गुह्य' योगि गोचर तुम्हीं, सर्वजनों से गुप्त।
नमूँ नमूँ मुझ मन बसो, करो मोह अरि सुप्त।।50।।

ॐ ह्रीं अर्हं गुह्यनामसमन्विताय श्री अरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उपजाति-छंद

'परार्ध्य' स्वामी सबमें प्रधाना।
उत्कृष्ट ऋद्धी सुख के निधाना।।
पूजूँ तुम्हें श्री अरनाथ ध्याऊँ।
स्वात्मैक सिद्धी प्रभु शीघ्र पाऊँ।।51।।

ॐ ह्रीं अर्हं परार्ध्यनामसमन्विताय श्री अरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ! 'परमेश्वर' आप ही हैं।
उत्कृष्ट मुक्ती श्रीनाथ ही हैं।।पूजूँ.।।52।।

ॐ ह्रीं अर्हं परमेश्वरनामसमन्विताय श्री अरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनन्त ऋद्धी प्रभु आप में हैं।
अतः 'अनंतर्द्धि' प्रभो! तुम्हीं हो।।पूजूँ.।।53।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनन्तर्द्धिनामसमन्विताय श्री अरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अमेय ऋद्धी मर्याद हीना।
अतः 'अमेयर्द्धि' प्रभो! तुम्हीं हो।।पूजूँ.।।54।।

ॐ ह्रीं अर्हं अमेयर्द्धिनामसमन्विताय श्री अरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अचिन्त्य ऋद्धी नहिं सोच सकते।
अतः 'अचिन्त्यर्द्धि' प्रभो! तुम्हीं हो।।पूजूँ.।।55।।
ॐ ह्रीं अर्हं अचिन्त्यर्द्धिनामसमन्विताय श्री अरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'समग्रधी' ज्ञेयप्रमाण बुद्धी।
कैवल्यज्ञानी प्रभु आप ही हो।।पूजूँ.।।56।।
ॐ ह्रीं अर्हं समग्रधीनामसमन्विताय श्री अरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
हे नाथ! तुम मुख्य सभी जनों में।
हो 'प्राग्रय' इससे मैं नित्य वंदूँ।।पूजूँ.।।57।।
ॐ ह्रीं अर्हं प्राग्रयनामसमन्विताय श्री अरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
प्रत्येक मंगल शुभ कार्य में ही।
तुम्हें स्मरते प्रभु 'प्राग्रहर' हो।।पूजूँ।।58।।
ॐ ह्रीं अर्हं प्राग्रहरनामसमन्विताय श्री अरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
लोकाग्र के सम्मुख हो रहे हो।
'अभ्यग्र' इससे मुनिनाथ कहते।।पूजूँ.।।59।।
ॐ ह्रीं अर्हं अभ्यग्रनामसमन्विताय श्री अरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'प्रत्यग्र' नूतन संपूर्ण जन में।
प्रभो! विलक्षण तुम ही कहाते।।पूजूँ.।।60।।
ॐ ह्रीं अर्हं प्रत्यग्रनामसमन्विताय श्री अरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
स्वामी सभी के तुम 'अग्र्य' मानें।
मैंने शरण ली अतएव आके।।पूजूँ.।।61।।
ॐ ह्रीं अर्हं अग्र्यनामसमन्विताय श्री अरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
संपूर्ण जन में प्रभु अग्रसर हो।
अतएव 'अग्रम' कहते सुरेंद्रा।।पूजूँ.।।62।।
ॐ ह्रीं अर्हं अग्रिमनामसमन्विताय श्री अरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
हो ज्येष्ठ सबमें 'अग्रज' कहाते।
त्रैलोक्य में नाथ तुम्हीं बड़े हो।।पूजूँ.।।63।।
ॐ ह्रीं अर्हं अग्रजनामसमन्विताय श्री अरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'महातपा' घोर सुतप किया है।
बारह तपों को मुझको भि देवो।।पूजूँ.।।64।।

ॐ ह्रीं अर्हं महातपनामसमन्विताय श्री अरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
तेजोमयी पुण्य प्रभो! धरे हो।
'महासुतेजा' तुम तेज फैला।।
पूजूँ तुम्हें श्री अरनाथ ध्याऊँ।
स्वात्मैक सिद्धी प्रभु शीघ्र पाऊँ।।65।।
ॐ ह्रीं अर्हं महातेजनामसमन्विताय श्री अरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
प्रभो! 'महोदर्क' तुम्हें कहे हैं।
महान तप का फल श्रेष्ठ पाया।।पूजूँ.।।66।।
ॐ ह्रीं अर्हं महोदर्कनामसमन्विताय श्री अरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ऐश्वर्य भारी प्रभु आपका है।
अतः 'महोदय' जग में तुम्हीं हो।।पूजूँ.।।67।।
ॐ ह्रीं अर्हं महोदयनामसमन्विताय श्री अरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
कीर्ती चहूँदिश प्रभु की सुफैली।
'महायशा' नाम कहा इसी से।।पूजूँ.।।68।।
ॐ ह्रीं अर्हं महायशनामसमन्विताय श्री अरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
प्रभो! महाधाम तुम्हीं कहाते।
विशाल ज्ञानी सुप्रताप धारी।।पूजूँ.।।69।।
ॐ ह्रीं अर्हं महाधामनामसमन्विताय श्री अरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
प्रभो! 'महासत्त्व' अपार शक्ती।
हे नाथ! मुझको निज शक्ति देवो।।पूजूँ.।।70।।
ॐ ह्रीं अर्हं महासत्त्वनामसमन्विताय श्री अरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'महाधृती' धैर्य असीम धारी।
आपत्ति में धैर्य रहे मुझे भी।।पूजूँ.।।71।।
ॐ ह्रीं अर्हं महाधृतिनामसमन्विताय श्री अरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
प्रभो! 'महाधैर्य' त्रिलोक में भी।
क्षोभादि भय से नहिं आकुली थे।।पूजूँ.।।72।।
ॐ ह्रीं अर्हं महाधैर्यनामसमन्विताय श्री अरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'महावीर्य' अनंतशक्ती।
महान तेजोबल वीर्य शाली।।पूजूँ.।।73।।

ॐ ह्रीं अर्हं महावीर्यनामसमन्विताय श्री अरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'महासंपत्' सर्वसंपत्।
समोसरण में तुम पास शोभे।।पूजूँ.।।74।।

ॐ ह्रीं अर्हं महासंपत्नामसमन्विताय श्री अरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'महाबल' तनु शक्ति भारी।
ऐसी जगत् में नहिं अन्य के हो।।पूजूँ.।।75।।

ॐ ह्री अर्हं महाबलनामसमन्विताय श्री अरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

-शिखरणी-छंद-

'महाशक्ती' धारो त्रिभुवन गुरू आप सच में।
महा उत्साही थे बहुविध तपा आप तप भी।।
प्रभू श्री अरजिनवर नित प्रति जपूँ भाव मन से।
मिले ऐसी शक्ती पृथक् कर लूँ आत्म तन से।।76।।

ॐ ह्रीं अर्हं महाशक्तिनामसमन्विताय श्री अरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाज्योती' स्वामी, अद्भुत परंज्ञानमय हो।
मुझे ज्ञानज्योती झटिति प्रभु दो पूर्ण सुख हो।।प्रभू.77।।

ॐ ह्रीं अर्हं महाज्योतिनामसमन्विताय श्री अरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाभूती' स्वामी, विभव अतिशायी जगत में।
प्रभो राजें सिंहासन मणिमय पे अधर ही।।प्रभू.।।78।।

ॐ ह्रीं अर्हं महाभूतिनामसमन्विताय श्री अरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभू की जो शोभा 'महाद्युति' नामा धरत है।
नहीं ऐसी कांती रतनमणि में भी दिखत है।।प्रभु.।।79।।

ॐ ह्रीं अर्हं महाद्युतिनामसमन्विताय श्री अरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महाबुद्धी पूर्णा 'महामति' का नाम धरती।
हमें भी दे दीजे सुमति भगवन्! होय सुगती।।
प्रभू श्री अरजिनवर नित प्रति जपूँ भाव मन से।
मिले ऐसी शक्ती पृथक् कर लूँ आत्म तन से।।80।।

ॐ ह्रीं अर्हं महामतिनामसमन्विताय श्री अरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महानीती' धारो सकल जन का न्याय करते।
महा दुष्कर्मों से अलग करके सौख्य भरते।।प्रभू.।।81।।

ॐ ह्रीं अर्हं महानीतिनामसमन्विताय श्री अरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाक्षान्ती' स्वामी परम करुणा भव्य जन पे।
निकालो दुःखों से करम अरि को माफ करते।।प्रभू.।।82।।

ॐ ह्रीं अर्हं महाक्षान्तिनामसमन्विताय श्री अरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महादय' हो स्वामी, सकल भवि प्राणी पर दया।
किया शिष्यों से भी सतत पलवायी अहिंसा।।प्रभू.।।83।।

ॐ ह्रीं अर्हं महादयनामसमन्विताय श्री अरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महाविद्वान् भगवान शिवप्रद 'महाप्राज्ञ' तुम हो।
मुझे दीजे बुद्धी भवदधि तरूँ युक्ति करके।।प्रभू.।।84।।

ॐ ह्रीं अर्हं महाप्राज्ञनामसमन्विताय श्री अरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महाभागी स्वामी सुखकर 'महाभाग' तुम हो।
महा पूजा पायी सुरपति किया भक्ति रुचि से।।प्रभू.।।85।।

ॐ ह्रीं अर्हं महाभागनामसमन्विताय श्री अरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निजानंदात्मा हो सुखमय 'महानंद' प्रभु हो।
मुझे दीजे स्वामी सकल सुखकर मोक्षपदवी।।प्रभू.।।86।।

ॐ ह्रीं अर्हं महानंदनामसमन्विताय श्री अरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाकवि' हे स्वामिन्! सकल सुखदायी वचन हैं।
प्रभो दीजे शक्ती मुझ वचन सिद्धी प्रगट हो।।प्रभू.।।87।।

ॐ ह्रीं अर्हं महाकविनामसमन्विताय श्री अरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महामह' हे स्वामिन्! सुरपति करें आप अर्चा।
महा तेजस्वी हो अखिल जनता सौख्य भरता।।प्रभू.।।88।।

ॐ ह्रीं अर्हं महामहनामसमन्विताय श्री अरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाकीर्ती' स्वामी सुयश तुम व्यापा भुवन में।
प्रभू पादाम्बुज को सतत प्रणमूँ स्वात्मनिधि दो।।प्रभू.।।89।।

ॐ ह्रीं अर्हं महाकीर्तिनामसमन्विताय श्री अरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाकान्ती' धारो अतुल छवि है आप तनु की।
सभी आधी व्याधी हरण करके स्वस्थ कर दो।।प्रभू.।।90।।

ॐ ह्रीं अर्हं महाकान्तिनामसमन्विताय श्री अरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! ऊँचे देही, 'महावपु' तुम ही चरम हो।
मिटा दो बाधायें विघ्न हरता आप जग में।।प्रभू.।।91।।

ॐ ह्रीं अर्हं महावपुनामसमन्विताय श्री अरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अहिंसा जीवों की अभयद 'महादान' करते।
हमारी रक्षा भी झटिति प्रभु कीजे जगत् से।।प्रभू.।।92।।

ॐ ह्रीं अर्हं महादाननामसमन्विताय श्री अरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! केवलज्ञानी युगपत् 'महाज्ञान' गुण से।
सभी लोकालोकं विशद त्रयकालिक लखत हो।।प्रभू.।।93।।

ॐ ह्रीं अर्हं महाज्ञाननामसमन्विताय श्री अरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! एकाग्री हो शिवप्रद 'महायोग' गुण से।
स्वयं में ही साधा निजसुख महाध्यान बल से।।प्रभू.।।94।।

ॐ ह्रीं अर्हं महायोगनामसमन्विताय श्री अरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुणों की खानी हो अतिशय 'महागुण' मुनि कहें।
गुणों को दे दीजे सकल मुझ दोषादि हन के।।
प्रभू श्री अरजिनवर नित प्रति जपूँ भाव मन से।
मिले ऐसी शक्ती पृथक् कर लूँ आत्म तन से।।95।।

ॐ ह्रीं अर्हं महागुणनामसमन्विताय श्री अरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुमेरू पे तेरा न्हवन करते इंद्रगण भी।
महापूजा पायी 'महामहपति' आज जग में।।प्रभू.।।96।।

ॐ ह्रीं अर्हं महामहपतिनामसमन्विताय श्री अरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरेंद्रों के द्वारा प्रभु 'प्राप्तमहाकल्याणपंचक'।
गरभ जन्मादी में उत्सव किया देवगण ने।।प्रभू.।।97।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्राप्तमहाकल्याणपंचकनामसमन्विताय श्री अरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सभी के स्वामी हो अतिशय 'महाप्रभु' भुवन में।
निवारो मोहारी बहुत दुख देता जु मुझको।।प्रभू.।।98।।

ॐ ह्रीं अर्हं महाप्रभुनामसमन्विताय श्री अरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाप्रातीहार्याधिश' चमर छत्रादिक लहा।
शतेंद्रों से पूजित त्रिभुवन विभव आप चरणों।।प्रभू.।।99।।

ॐ ह्रीं अर्हं महाप्रातिहार्याधिशनामसमन्विताय श्री अरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महेश्वर' हो स्वामी सुरपति अधीश्वर तुमहि हो।
सुभक्ती से वंदूँ झटिति शिवलक्ष्मी वरद हो।।प्रभू.।।100।।

ॐ ह्रीं अर्हं महेश्वरनामसमन्विताय श्री अरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

-चौपाई-

सब पर्याय अनंतानंत, प्रभु में अंतर्लीन बसंत।
पिया नंतपर्याय जिनंद, जजूँ सिद्ध हो परमानंद।।101।।

ॐ ह्रीं अर्हं निष्पीतानंतपर्यायनामसमन्विताय श्री अरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अठरह सहस शील के ईश, ब्रह्मचर्य से त्रिभुवन शीश।
ब्रह्मा-स्वात्मतत्त्व में लीन, बने सिद्ध पूजत भव क्षीण।।102।।

ॐ ह्रीं अर्हं अष्टादशसहस्रशीलेशनामसमन्विताय श्री अरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुणस्थान चौदहवें काल, 'अइउऋलृ' उच्चारण काल।
जिन अयोगि तत्क्षण लोकाग्र, नमूँ सिद्ध हो मन एकाग्र।।103।।

ॐ ह्रीं अर्हं पंचलघुअक्षरस्थितनामसमन्विताय श्री अरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्धद्रव्य से सिद्ध महान्, नमूँ नमूँ परमात्म प्रधान।
पाऊँ स्वात्मतत्त्व का ध्यान, बने अंतरात्मा भगवान।।104।।

ॐ ह्रीं अर्हं द्रव्यसिद्धनामसमन्विताय श्री अरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–चौबोल छंद–

जिन अयोगि द्विचरम समय में, प्रकृति बहत्तर पृथक् किया।
उनको आशिष देकर छोड़ा, परमानंद पियूष पिया।।
उनको पूजत मुझको भी तो, ऐसा द्विचरम समय मिले।
कर्मनाश कर निज सुख पाऊँ, केवलज्ञान प्रसून खिले।।105।।

ॐ ह्रीं अर्हं द्वासप्ततिप्रकृत्याशिषनामसमन्विताय श्री अरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एक वेदनी मनुषगती अनुपूर्वि आयु पंचेन्द्रि सुभग।
त्रस बादर पर्याप्त यशस्कीर्ती आदेय गोत्र भी उच्च।।

तीर्थंकर मिले तेरह प्रकृती, अंत समय में नष्ट हुईं।
मानों नमन किया सिद्धों को, उन पूजत निज तृप्ति हुई।।106।।

ॐ ह्रीं अर्हं त्रयोदशप्रकृतिप्रणुतनामसमन्विताय श्री अरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोक अलोक प्रकाशी, केवलज्ञान लबालब पूर्ण भरा।
गुण अनंत बतलाने वाला, यही एक गुण श्रेष्ठ खरा।।
इससे काल अनंतानंते, सिद्ध मोक्ष में सौख्य भरें।
केवलज्ञान ज्योति हेतु हम, नमन अनंतों बार करें।।107।।

ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञाननिर्भरनामसमन्विताय श्री अरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण अनंत में एक ज्ञान ही, चिन्मय जीव स्वरूप धरे।
ज्ञान बिना गुण भले अनंते, उनकी कीमत कौन करें।।
ज्ञानमात्र से ध्यानमग्न हो, केवलज्ञान सूर्य चमके।
ऐसे सिद्धों को नित पूजत, मेरी आतम ज्योति चमके।।108।।

ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञानैकचिज्जीवघननामसमन्विताय श्री अरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

पूर्णार्घ्य-शंभु-छंद

श्री वृक्षलक्षणा आदिक इक सौ, आठ नाम अतिशयकारी।
मैं पूजूँ ध्याऊँ भक्ति करूँ, पा जाऊँ निज संपति सारी।।
बहिरात्म अवस्था छोड़ नाथ! अंतर आतम शुद्धात्म बनूँ।
तुम भक्ति युक्ति से शक्ति पाय मुक्तिपद पा जिनराज बनूँ।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीवृक्षलक्षणादि–अष्टोत्तरशतनाममंत्रविभूषिताय श्री अरनाथतीर्थंकराय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। पुष्पांजलिः।

जाप्यमंत्र – **ॐ ह्रीं श्री अरनाथतीर्थंकराय नमः।**

(जाप्य मंत्र 108 बार, 27 बार या 9 बार सुगंधित पुष्पों से, लवंग से या पीले चावल से जपें)

जयमाला

–दोहा –

हस्तिनागपुर में हुये, गर्भ जन्म तप ज्ञान।
सम्मेदाचल मोक्षथल, पूजूँ अर भगवान।।1।।

–त्रिभंगी छंद –

पितु नृपति सुदर्शन सोमवंशवर, प्रसू मित्रसेना सुत थे।
आयू चौरासी सहस वर्ष धनु, तीस तनू स्वर्णिम छवि थे।।
गुरु तीस गणाधिप मुनि पचास, हज्जार आर्यिका साठ सहस।
श्रावक इक लाख व साठ सहस, श्राविका लाख त्रय धर्मनिरत।।2।।

–पंचचामर छंद –

जयो जिनेश! आप तीर्थनाथ तीर्थरूप हो।
जयो जिनेश! आप मुक्तिनाथ मुक्तिरूप हो।।
जयो जिनेश! आप तीन लोक के अधीश हो।
जयो जिनेश! आप सर्व आश्रितों के मीत हो।।3।।

सभी सुरेन्द्र भक्ति से सदैव वंदना करें।
सभी नरेन्द्र आपकी सदैव अर्चना करें।।
सभी खगेन्द्र हर्ष से जिनेन्द्र कीर्ति गावते।
सभी मुनीन्द्र चित्त में तुम्हीं को एक ध्यावते।।4।।

अपूर्व तेज आप देख कोटि सूर्य लज्जते।
अपूर्व सौम्य मूर्ति देख कोटि चन्द्र लज्जते।।
अपूर्व शांति देख क्रूर जीव वैर छोड़ते।
सुमंद मंद हास्य देख शुद्ध चित्त होवते।।5।।

अनेक भव्य आपके पदाब्ज पूजते सदा।
अनेक जन्म पाप भी क्षणेक में नशें तदा।।
अनेक जीव भक्ति बिन अनंत जन्म धारते।
अनेक जीव भक्ति से अनंत सौख्य पावते।।6।।

अनंत ज्ञानरूप हो अनंत ज्ञानकार हो।
अनंत दर्शरूप हो अनंत दर्शकार हो।।
अनंत सौख्यरूप हो अनंत सौख्यकार हो।
अनंत वीर्यरूप हो अनंत शक्तिकार हो।।7।।

–दोहा –

अरतीर्थंकर जगप्रथित, मीन चिन्ह से नाथ! ।
पावें अविचल कीर्ति को, जो पूजें नत माथ।।8।।

कामदेव चक्रीश प्रभु, अठारवें तीर्थेश।
''ज्ञानमती'' कैवल्य हित, नमूँ नमूँ परमेश।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अरनाथतीर्थंकराय जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–शंभु छंद –

जिनवर अरनाथ विधान भक्ति, श्रद्धा से जो जन करते हैं।
संपूर्ण अमंगल दोष हरें, नित नव–नव मंगल लभते हैं।।
सुख संतति संपति वृद्धि करें, रत्नत्रय निधि को पाते हैं।
कैवल्य ज्ञानमति सूर्य उदय , से भविजन कमल खिलाते हैं।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

प्रशस्ति

–शंभु छंद –

चौबीस तीर्थंकर को वंदूँ, माँ सरस्वती को नमन करूँ।
गणधर गुरु के सब साधू के, श्री चरणों में नित शीश धरूँ।।
इस युग में कुंदकुंदसूरी, का अन्वय जगत् प्रसिद्ध हुआ।
इसमें सरस्वती गच्छ बलात्कारगण अतिशायि समृद्ध हुआ।।1।।

इस परम्परा में साधु मार्ग, उद्धारक दिग्अंबर धारी।
आचार्य शांतिसागर चारित्र-चक्रवर्ती पद के धारी।।
इन गुरु के पट्टाधीश हुए, आचार्य वीरसागर गुरुवर।
इनकी मैं शिष्या गणिनी-ज्ञानमती आर्यिका प्रथित भू पर।।2।।

मैंने जिनवर की भक्तीवश, बहुतेक विधान रचें सुंदर।
इन्द्रध्वज, कल्पद्रुम विधान, सर्वतोभद्र पूजा मनहर।।
श्री जम्बूद्वीप व तीनलोक, आदिक विधान जगमान्य हुए।
भक्तीप्रधान इस युग में तो, भक्तों को अतिशय मान्य हुए।।3।।

जिनवर अरनाथ तीर्थंकर की यह विधान रचना की मैंने।
जिनवर भक्ती ही है निमित्त, यह भक्ती सदा फले मुझ में।।
श्री अरनाथ जिनवर विधान, भव्यों को अतिशय प्रिय होवे।
जब तक जिनधर्म रहे जग में, तब तक भक्तों का अघ धोवे।।4।।

–दोहा –

शांति कुंथु अरनाथ के, चार चार कल्याण।
हस्तिनागपुर में हुये, शत शत करूँ प्रणाम।।5।।

।।इति श्रीकुंथुनाथविधानं संपूर्णम्।।

जैनं जयतु शासनम्।

पूजा नं. ३

श्री अरनाथ जन्मभूमि हस्तिनापुर तीर्थ पूजा

स्थापना –गीता छंद

श्री शांति कुंथू अर जिनेश्वर, जन्म ले पावन किया।
दीक्षा ग्रहण कर तीर्थ यह, मुनिवृन्द मनभावन किया।।
निज ज्ञान ज्योती प्रकट कर, शिवमार्ग को प्रकटित किया।
इस हस्तिनापुर क्षेत्र को, मैं पूजहूँ हर्षित हिया।।

ॐ ह्रीं हस्तिनापुरतीर्थक्षेत्रे गर्भ-जन्म-तपो-ज्ञान-कल्याणकधारकाः श्रीशांति-कुंथु-अरतीर्थंकराः! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं हस्तिनापुरतीर्थक्षेत्रे गर्भ-जन्म-तपो-ज्ञान-कल्याणकधारकाः श्रीशांति-कुंथु-अरतीर्थंकराः! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं हस्तिनापुरतीर्थक्षेत्रे गर्भ-जन्म-तपो-ज्ञान-कल्याणकधारकाः श्रीशांति-कुंथु-अरतीर्थंकराः! अत्र मम सन्निहितो भवत भवत वषट् सन्निधीकरणं।

–चामर छंद –

तीर्थ रूप शुद्ध स्वच्छ सिंधु नीर लाइये।
गर्भवास दुःखनाश तीर्थ को चढ़ाइये।।
हस्तिनागपुर पवित्र तीर्थ अर्चना करूँ।
तीर्थनाथ पाद की सदैव वंदना करूँ।।1।।

ॐ ह्रीं श्री शांति-कुंथु-अरतीर्थंकर-गर्भ-जन्म-तपो-ज्ञानकल्याणकपवित्र-हस्तिनापुरतीर्थक्षेत्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कुंकुमादि अष्ट गंध लेय तीर्थ पूजिये।
राग आग दाह नाश पूर्ण शांत हूजिये।।
हस्तिनागपुर पवित्र तीर्थ अर्चना करूँ।
तीर्थनाथ पाद की सदैव वंदना करूँ।।2।।

ॐ ह्रीं श्री शांति-कुंथु-अरतीर्थंकर-गर्भ-जन्म-तपो-ज्ञानकल्याणकपवित्र-हस्तिनापुरतीर्थक्षेत्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्द्र तुल्य श्वेत शालि पुंज को रचाइये।
देह सौख्य छोड़ आत्म सौख्य पुंज पाइये।।
हस्तिनागपुर पवित्र तीर्थ अर्चना करूँ।
तीर्थनाथ पाद की सदैव वंदना करूँ।।3।।

ॐ ह्रीं श्री शांति-कुंथु-अरतीर्थंकर-गर्भ-जन्म-तपो-ज्ञानकल्याणकपवित्र-हस्तिनापुरतीर्थक्षेत्राय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कुंद केतकी गुलाब वर्ण-वर्ण के लिए।
मार मल्लहारि तीर्थक्षेत्र को चढ़ा दिए।।
हस्तिनागपुर पवित्र तीर्थ अर्चना करूँ।
तीर्थनाथ पाद की सदैव वंदना करूँ।।4।।

ॐ ह्रीं श्री शांति-कुंथु-अरतीर्थंकर-गर्भ-जन्म-तपो-ज्ञानकल्याणकपवित्र-हस्तिनापुरतीर्थक्षेत्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

खीर पूरिका इमर्तियाँ भराय थाल में।
तीर्थ क्षेत्र पूजते क्षुधा महा व्यथा हने।।
हस्तिनागपुर पवित्र तीर्थ अर्चना करूँ।
तीर्थनाथ पाद की सदैव वंदना करूँ।।5।।

ॐ ह्रीं श्री शांति-कुंथु-अरतीर्थंकर-गर्भ-जन्म-तपो-ज्ञानकल्याणकपवित्र-हस्तिनापुरतीर्थक्षेत्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप में कपूर ज्योति अंधकार को हने।
आरती करंत अंतरंग ध्वांत को हने।।
हस्तिनागपुर पवित्र तीर्थ अर्चना करूँ।
तीर्थनाथ पाद की सदैव वंदना करूँ।।6।।

ॐ ह्रीं श्री शांति-कुंथु-अरतीर्थंकर-गर्भ-जन्म-तपो-ज्ञानकल्याणकपवित्र-हस्तिनापुरतीर्थक्षेत्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप गंध लेय अग्निपात्र में जलाइये।
मोह कर्म भस्म को उड़ाय सौख्य पाइये।।

हस्तिनागपुर पवित्र तीर्थ अर्चना करूँ।
तीर्थनाथ पाद की सदैव वंदना करूँ।।7।।

ॐ ह्रीं श्री शांति-कुंथु-अरतीर्थंकर-गर्भ-जन्म-तपो-ज्ञानकल्याणकपवित्र-हस्तिनापुरतीर्थक्षेत्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

मातुलिंग आम्र सेव संतरा मंगाइये।
तीर्थ पूजते हि सिद्धि संपदा सुपाइये।।
हस्तिनागपुर पवित्र तीर्थ अर्चना करूँ।
तीर्थनाथ पाद की सदैव वंदना करूँ।।8।।

ॐ ह्रीं श्री शांति-कुंथु-अरतीर्थंकर-गर्भ-जन्म-तपो-ज्ञानकल्याणकपवित्र-हस्तिनापुरतीर्थक्षेत्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीर गंध अक्षतादि अर्घ को बनाइये।
मुक्ति अंगना निमित्त तीर्थ को चढ़ाइये।।
हस्तिनागपुर पवित्र तीर्थ अर्चना करूँ।
तीर्थनाथ पाद की सदैव वंदना करूँ।।9।।

ॐ ह्रीं श्री शांति-कुंथु-अरतीर्थंकर-गर्भ-जन्म-तपो-ज्ञानकल्याणकपवित्र-हस्तिनापुरतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा –

प्रासुक मिष्ट सुगंध जल, क्षीरोदधि सम श्वेत।
तीरथ पर धारा करूँ, तिहुँ जग शांती हेतु।।

शांतये शांतिधारा।।

पारिजात के पुष्प से, पुष्पांजली करंत।
पावन तीर्थ महान यह, करे भवोदधि अंत।।

दिव्य पुष्पांजलिः।।

जयमाला

–दोहा –

समवसरण में राजते, ज्ञानज्योति से पूर्ण।
शांति-कुंथु-अर नाथ को, पूजत ही दुःख चूर्ण।।1।।

–शंभु छंद –

श्री आदिनाथ को सर्वप्रथम, इक्षूरस का आहार दिया।
श्रेयांस नृपति ने, यहाँ तभी से, दान तीर्थ यह मान्य हुआ।।
देवों ने पंचाश्चर्य किया, रत्नों की वर्षा खूब हुई।
वैशाख सुदी अक्षय तृतिया, यह तिथि भी सब जग पूज्य हुई।।2।।

श्री शांति-कुंथु-अर तीर्थंकर, इन तीनों के इस तीरथ पर।
हुए गर्भ-जन्म-तप-ज्ञान चार, कल्याणक इस ही भूतल पर।।
अगणित देवी देवों के संग, सौधर्म इंद्र तब आये थे।
अतिशय कल्याणक पूजा कर, भव-भव के पाप नशाये थे।।3।।

आचार्य अकंपन के संघ में, मुनि सात शतक जब आये थे।
उन पर बलि ने उपसर्ग किया, तब जन-जन मन अकुलाये थे।।
श्री विष्णुकुमार मुनीश्वर ने, उपसर्ग दूर कर रक्षा की।
रक्षाबंधन का पर्व चला, श्रावण सुदि पूनम की तिथि थी।।4।।

गंगा में गज को ग्राह ग्रसा, तब सुलोचना ने मंत्र जपा।
द्रौपदी सती का चीर बढ़ा, सतियों की प्रभु ने लाज रखा।।
श्रेयांस सोमप्रभ जयकुमार, आदीश्वर के गणधर होकर।
शिव गये अन्य नरपुंगव भी, पांडव भी हुए इसी भू पर।।5।।

राजा श्रेयांस ने स्वप्ने में, देखा था मेरु सुदर्शन को।
सो आज यहाँ इक सौ इक फुट, उत्तुंग सुमेरू बना अहो।।
यह जंबूद्वीप बना सुंदर, इसमें अठहत्तर जिनमंदिर।
इक सौ तेइस हैं देवभवन, उसमें भी जिनप्रतिमा मनहर।।6।।

जो भक्त भक्ति में हो विभोर, इस जम्बूद्वीप में आते हैं।
उत्तुङ्ग सुमेरू पर चढ़कर, जिन वंदन कर हर्षाते हैं।।
फिर सब जिनगृह को अर्घ चढ़ा, गुण गाते गद्गद हो जाते।
वे कर्म धूलि को दूर भगा, अतिशायी पुण्य कमा जाते।।7।।

श्री आदिनाथ, भरतेश और, बाहूबलि तीन मूर्ति अनुपम।
श्री शांति कुंथु अर चक्रीश्वर, तीर्थंकर की मूर्ती निरुपम।।
वर कल्पवृक्ष महावीर प्रभू का, जिनमंदिर अतिशोभित है।
यह कमलाकार बना सुन्दर, इसमें जिनप्रतिमा राजित हैं।।8।।

श्री शांतिनाथ मंदिर-वृषभेश्वर मंदिर-वासुपूज्य मंदिर।
है तेरहद्वीप जिनालय एवं बना ''ॐ'' मंदिर सुन्दर।।
ग्रह की बाधा हरने वाला, नवग्रहशांती जिनमंदिर है।
इक सहस्र आठ प्रतिमाओं से युत, सहस्रकूट जिनमंदिर है।।9।।

है विद्यमान विंशति प्रतिमाओं, से संयुत मंदिर सुन्दर।
आदी तीर्थंकर ऋषभदेव का, कीर्तिस्तंभ बना मनहर।।
श्री शांति-कुंथु-अरनाथ प्रभू की, बड़ी-बड़ी प्रतिमाएँ हैं।
फिर तीनलोक रचना के जिनबिम्बों को शीश झुकाऊँ मैं।।10।।

जय शांति कुंथु अर तीर्थेश्वर, जय इनके पंचकल्याणक की।
जय जय हस्तिनापुर तीर्थक्षेत्र, जय जय हो सम्मेदाचल की।।
जय जंबूद्वीप तेरहों द्वीप, नंदीश्वर के जिन भवनों की।
जय भीम, युधिष्ठिर, अर्जुन और सहदेव नकुल पांडव मुनि की।।11।।

ॐ ह्रीं श्री शांति-कुंथु-अर-तीर्थंकर-गर्भ-जन्म-तपोज्ञानकल्याणकपवित्र-हस्तिनापुरतीर्थक्षेत्राय जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। पुष्पांजलिः।।

–दोहा –

तीर्थक्षेत्र की अर्चना, हरे सकल दुख दोष।
'ज्ञानमती' संपत्ति दे, भरे आत्मसुख कोष।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

अरनाथ भगवान की आरती

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

तर्ज–जैन धर्म के हीरे मोती...........

अरहनाथ तीर्थंकर प्रभु की, आरतिया मनहारी है,
जिसने ध्याया सच्चे मन से, मिले ज्ञान उजियारी है ।।टेक.।।

हस्तिनागपुर की पावन भू, जहाँ प्रभुवर ने जन्म लिया।
पिता सुदर्शन मात मित्रसेना का जीवन धन्य किया।।
सुर नर वन्दित उन प्रभुवर को, नित प्रति धोक हमारी है,
जिसने ध्याया ....।।1।।

तीर्थंकर, चक्री अरु कामदेव पदवी के धारी हो।
स्वर्ण वर्ण आभायुत जिनवर, काश्यप कुल अवतारी हो।।
मनभावन है रूप तिहारा, निरख-निरख बलिहारी है,
जिसने ध्याया ....।।2।।

फाल्गुन वदि तृतिया को गर्भकल्याणक सभी मनाते हैं।
मगशिर सुदि चौदस की जन्मकल्याणक तिथि को ध्याते हैं।।
मगशिर सित दशमी दीक्षा ली, मुनी श्रेष्ठ पदधारी हैं,
जिसने ध्याया ....।।3।।

कार्तिक सुदि बारस में, केवलज्ञान उदित हो आया था।
हस्तिनागपुर में ही इन्द्र ने, समवसरण रचवाया था।।
स्वयं अरी कर्मों को घाता, अर्हत्पदवी प्यारी है,
जिसने ध्याया ....।।4।।

मृत्युजयी बन, सिद्धपती बन, लोक शिखर पर जा तिष्ठे।
गिरि सम्मेदशिखर है पावन, जहाँ से जिनवर मुक्त हुए।।
जजे ''चंदनामति'' प्रभु वर दो, मिले सिद्धगति न्यारी है,
जिसने ध्याया ....।।5।।

हस्तिनापुर तीर्थ की आरती

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

तर्ज–माई रे माई.............

हस्तिनागपुर तीरथ की हम, आरति करने आए।
आरति करते तीरथ की, निज अन्तर्मन खिल जाए।।
बोलो जय जय जय-2, प्रभू की जय, जय, जय।।टेक.।।

है इतिहास प्रसिद्ध तीर्थ यह, अतिप्राचीन सुपावन।
इस भूमी का वन्दन कर लो, अद्भुत है मनभावन।।
देवों द्वारा रची गई.....
देवों द्वारा रची गई, नगरी की महिमा गाएं।आरति.....।।1।।

वर्तमान के तीन तीर्थंकर, इसी धरा पर जन्में।
चक्रवर्ति अरु कामदेव तीनों पदवी से युत थे।।
तीन बार आ धनदराज ने...........
तीन बार आ धनदराज ने, रत्न बहुत बरसाए।।आरति.......।।2।।

प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव की, प्रथम पारणा भूमी।
दानतीर्थ का हुआ प्रवर्तन, धन्य हुई यह भूमी।।
अक्षय तृतिया पर्व आज भी...........
अक्षय तृतिया पर्व आज भी, वह इतिहास बताए।।आरति.......।।3।।

रक्षाबन्धन पर्व, महाभारत, की जुड़ी कहानी।
मनोवती की दर्श प्रतिज्ञा, शुरू यहीं से मानी।।
सति सुलोचना, रोहिणि रानी........
सति सुलोचना, रोहिणि रानी, की विख्यात कथाएं।।आरति.......।।4।।

गणिनी ज्ञानमती माताजी, नई चेतना लाईं।
स्वर्ग सरीखे जम्बूद्वीप से, विश्वप्रसिद्धि कराई।।
करे ''चन्दनामती'' वंदना........
करे ''चन्दनामती'' वंदना, ज्ञान ज्योति जग जाए।।आरति.......।।5।।

भजन

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

नाम तिहारा तारनहारा कब तेरा दर्शन होगा।
तेरी प्रतिमा इतनी सुन्दर, तू कितना सुन्दर होगा।। टेक.।।

जाने कितनी माताओं ने, कितने सुत जन्में हैं।
पर इस वसुधा पर तेरे सम, कोई नहीं बने हैं।।
पूर्व दिशा में सूर्य देव सम, सदा तेरा सुमिरन होगा।
तेरी प्रतिमा इतनी सुन्दर, तू कितना सुन्दर होगा।।1।।

पृथ्वी के सुन्दर परमाणू, सब तुझमें ही समा गए।
केवल उतने ही अणु मिलकर, तेरी रचना बना गए।।
इसीलिए तुझ सम सुन्दर नहिं, कोई नर सुन्दर होगा।
तेरी प्रतिमा इतनी सुन्दर, तू कितना सुन्दर होगा।।2।।

मन में तव सुमिरन करने से, पाप सभी नश जाते हैं।
यदि प्रत्यक्ष करें तव दर्शन, मनवांछित फल पाते हैं।।
आज "चंदनामती" प्रभू का, अनुपम गुण कीर्तन होगा।
तेरी प्रतिमा इतनी सुन्दर, तू कितना सुन्दर होगा।।3।।

भजन

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

तर्ज-देख तेरे संसार............

विश्व की सबसे ऊँची प्रतिमा बनी है आलीशान,
जय जय ऋषभदेव भगवान।।टेक.।।
मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र में।
पर्वत के पाषाण खण्ड में।।
गणिनीप्रमुख ज्ञानमती माता की प्रेरणा महान,
जय जय ऋषभदेव भगवान।।1।।
ऋषभदेव प्रतिमा प्रगटी है।
गुरुमाता की तपशक्ती है।।
उनका गौरवमय ससंघ सानिध्य मिला है महान,
जय जय ऋषभदेव भगवान।।2।।
इक सौ अठ फुट की यह प्रतिमा।
जिनशासन की अद्‌भुत गरिमा।।
यह आश्चर्य प्रथम है जग में जैनधरम की शान,
जय जय ऋषभदेव भगवान।।3।।
यह है आयडल ऑफ अहिंसा।
भारत की पहचान अहिंसा।।
इसे "चन्दनामती" हृदय से कर लो सभी प्रणाम,
जय जय ऋषभदेव भगवान।।4।।
श्री रवीन्द्रकीर्ति का समर्पण।
भक्तों का अर्थाञ्जलि अर्पण।।
अमर रहेगा युग युग तक सबका तन मन धन दान,
जय जय ऋषभदेव भगवान।।5।।

गुरु मंगलाष्टक

(श्री वृन्दावन कवि विरचित)

संघ सहित श्री **कुंदकुंद** गुरु, वंदन हेतु गये गिरनार।
वाद पर्‌यो तहँ संशयमति सो, साक्षीवदी अंबिकाकार।।
सत्य पंथ निरग्रंथ दिगम्बर, कही सुरी तहँ प्रगट पुकार।
सो गुरुदेव बसो उर मेरे, विघन हरण मंगल करतार।।1।।

स्वामी **समंदभद्र** मुनिवर सो, शिवकोटी हठ कियो अपार।
वंदन करो शंभु पिंडी को, तब गुरु रच्यो स्वयंभू भार।।
वंदन करत पिंडिका में से, प्रगट भये जिन चंद्र उदार।
सो गुरुदेव बसो उर मेरे, विघन हरण मंगल करतार।।2।।

श्री **अकलंक देव** मुनिवर सो, वाद रच्यो जहँ परत विचार।
तारादेवी घट में थापी, पट के ओट करत उच्चार।।
जीत्यो स्याद्वाद बल मुनिवर, बौद्ध बोध तारा मदटार।
सो गुरुदेव बसो उर मेरे, विघन हरण मंगल करतार।।3।।

श्रीमत **विद्यानंदि** जबै, श्री देवागम थुति सुनी सुधार।
अर्थ हेतु पहुँच्यो जिनमंदिर, मिल्यो अर्थ तहँ सुख दातार।।
तब व्रत परम दिगम्बर को धर, परमत को कीनो परिहार।
सो गुरुदेव बसो उर मेरे, विघन हरण मंगल करतार।।4।।

श्रीमत **मानतुंग** मुनिवर पर, भूप कोप जब कियो गंवार।
बंद कियो ताले में तब ही, भक्तामर गुरु रच्यो उदार।।
चक्रेश्वरी प्रगट तब ह्वैके, बंधन काट कियो जयकार।
सो गुरुदेव बसो उर मेरे, विघन हरण मंगल करतार।।5।।

श्रीमत **वादिराज मुनिवर** सों, कह्यो कुष्ट भूपति जिहँबार।
श्रावक सेठ कह्यो तिहँ अवसर, मेरे गुरु कंचन तन धार।।

तब ही एकीभाव रच्यौ गुरु, तन सुवरणद्युति भयो अपार।
सो गुरुदेव बसो उर मेरे, विघन हरण मंगल करतार।।6।।

श्रीमद् **कुमुदचंद्र मुनिवर** सों, वाद पर्‌यो जहँ सभा मंझार।
तब ही श्री कल्याण धाम थुति, श्री गुरु रचना रची अपार।।
तब प्रतिमा श्री पार्श्वनाथ की, प्रगट भई त्रिभुवन जयकार।
सो गुरुदेव बसो उर मेरे, विघन हरण मंगल करतार।।7।।

श्रीमत **अभयचंद्र** गुरु सो जब, दिल्लीपति इमि कही पुकार।
कै तुम मोहि दिखावहु अतिशय, कै पकरौ मेरो मतसार।।
तब गुरु प्रगट अलौकिक अतिशय, तुरत हर्‌यो ताको मदभार।
सो गुरुदेव बसो उर मेरे, विघन हरण मंगल करतार।।8।।

–दोहा–

विघन हरण मंगल करण, वांछित फल दातार।
'वृन्दावन' अष्टक रच्यो, करौ कंठ सुखकार।।